विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: हम इसे मनुष्य का विकल्प न बन जाने दें!

मानव जाति का इतिहास अनगिनत नई सुविधाओं और तकनीकों के विकास का भी इतिहास है। आग और पहिये से लगाकर डिजिटल दुनिया तक की यात्रा बहुत रोमांचक और उत्तेजक रही है। जब भी कोई नई सुविधा हमारे हाथों में आती है, हम यही सोचते हैं कि इस सुविधा के बग़ैर हम जी कैसे रहे थे! यही देखें कि जैसे-जैसे हमारी ज़िंदगी में कम्प्यूटर और इण्टरनेट का हस्तक्षेप और सहयोग बढ़ा है, हम बार-बार यह सोचने को मज़बूर होते हैं कि इनके बग़ैर हम कैसे अपना काम चलाते थे! आज जिस द्रुत गति से हम बैंकों से आदान-प्रदान कर लेते हैं उस द्रुत गति की आज से बीस-पच्चीस बरस पहले कल्पना भी संभव नहीं थी। इण्टरनेट और गूगल ने हमारे सामने सूचनाओं और जानकारियों की जो एक नई-सी लगने वाली दुनिया रच दी है उसने हमारी क्षमताओं को कई गुना बढ़ा दिया है। इसी क्रम को ज़ारी रखते हुए हाल में हमने एक और नई शक्ति हासिल कर ली है, जिसका नाम है कृत्रिम बुद्धिमत्ता, संक्षेप में एआई। कुछ समय पहले तक हम अपनी हर समस्या का समाधान गूगल में खोजते थे, आज वह काम यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता अधिक दक्षता के साथ कर रही है, और जिन्हें इस तरह की सहायता की ज़रूरत पड़ती है उन्होंने गूगल को छोड़कर चैटजीपीटी जैसे माध्यम को अपना लिया है। हम सबने अभूतपूर्व उत्साह से कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपना लिया है और जीवन के बहुत सारे क्षेत्रों में खुलकर इसका उपयोग करने लगे हैं। विज्ञान, चिकित्सा, व्यापार, वित्त, शिक्षा, कला-संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है।

चिकित्सा की दुनिया में रोगों के पूर्वानुमान, उनके सही निदान और रोबोटिक सर्जरी जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की जितनी उपादेयता अब तक प्रमाणित हुई है उतनी ही इसकी उपादेयता शिक्षा के क्षेत्र में भी नज़र आती है। शिक्षा की प्रभावोत्पादकता को बढ़ाने में और तटस्थ तथा निष्पक्ष मूल्यांकन करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपादेयता अब सर्व स्वीकृत है। जहां तक उद्योग और व्यापार का संबंध है, उत्पादन प्रक्रिया को सुगम और द्रुत बनाने में तथा ग्राहक सेवा को बेहतर बनाने में तथा डेटा विश्लेषण में इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में ही नहीं अपराध नियंत्रण के मामले में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अपनी भूमिका अब तक बहुत अच्छी तरह निबाहते हुए यह आस जगाई है कि इसके उपयोग से हमारा जीवन अधिक सुरक्षित हो जाएगा।

लेकिन जैसा हर सुविधा के साथ होता है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर भी अनेक सवाल उठने लगे हैं और कहना अनावश्यक है कि जैसे-जैसे इसका उपयोग बढ़ेगा, ये सवाल और अधिक प्रासंगिक और अनिवार्य होते जाएंगे। सबसे बड़ी चुनौती जिसे हर कोई महसूस करता है वह तो यह है कि इसकी वजह से बहुत सारे लोगों की आजीविका छिन जाएगी। वैसे यह ख़तरा कोई नया नहीं है। जब स्वचालन हमारी ज़िंदगी में आया या बहुत बाद में जब हमने अपने बहुत सारे काम कंप्यूटर को सौंप दिये तब भी बेरोज़गारी का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण रहा था। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता हमने महसूस किया कि जो लोग खुद को अपडेट कर पाने में सफल रहे उन्हें रोज़गार के बेहतर अवसर हासिल हुए। निस्संदेह बदलावों ने बहुत सारे लोगों का रोज़गार छीना भी, लेकिन उसमें उनकी अपनी निष्क्रियता और जड़ता की भी बड़ी भूमिका रही। ऐसा ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मामले में भी संभावित है। जो लोग इसके उपयोग में दक्षता प्राप्त कर लेंगे वे तो बेरोज़गार नहीं होंगे, लेकिन जो नए तौर तरीकों को अपनाने में रुचि नहीं लेंगे, उनके सामने ज़रूर आजीविका का संकट खड़ा होगा।

अब तक जो हुआ है उसके आधार पर यह सहज ही कल्पना की जा सकती है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग अभी और बढ़ेगा। और जब इसका अधिक उपयोग होगा तो स्वाभाविक ही है कि इसके दुरुपयोग की आशंकाएं भी बढ़ेगी। मानवता का हित इसी बात में निहित है कि हम अभी से उन आशंकाओं को समूल नष्ट करने के बारे में न केवल सोचें, सक्रिय भी हों।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैसा हम सब जानते हैं एल्गोरिद्म के आधार पर काम करती है, और जानकारों ने यह आशंका व्यक्त की है कि उन्हें कुछ इस तरह प्रयुक्त किया जा सकता है कि हम किसी ख़ास नज़रिये को महत्व और किसी ख़ास नज़रिये की उपेक्षा कर सकें। इस तरह अगर सब कुछ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भरोसे छोड़ दिया जाए और उसके एल्गोरिद्म को किसी ख़ास तरह से नियोजित कर दिया जाए तो इसके निर्णय भेदभावपूर्ण हो सकते हैं। यह बहुत बड़ा ख़तरा है। इससे एक बड़ा सवाल यह उपजता है कि अगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता से कोई ग़लत निर्णय हो जाता है, तो उसके लिए उत्तरदायी कौन होगा? इसी तरह क्योंकि यह पूरा तंत्र डेटा के आधार पर काम करता है, स्वाभाविक ही है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पास डेटा का बहुत बड़ा भण्डार होगा। विचारणीय और चिंता की बात यह है कि जो डेटा इसके पास है क्या वह हमारी निजता को भंग नहीं कर रहा है? उस डेटा के लीक हो जाने और उसके दुरुपयोग की आशंकाएं एक अन्य ख़तरा है। क्योंकि जीवन के हर क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग किया जाने लगा है, युद्ध और हथियारों का क्षेत्र भी इससे आज़ाद नहीं रहा है। विचारणीय बात यह है कि अगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग युद्धों में और स्वचालित हथियारों में होता है तो वह उपयोग कितना संवेदनपूर्ण या संवेदनशून्य होगा।

एक बहुत रोचक सवाल यह सामने आया है कि जैसे मनुष्य सही और गलत के बीच कुछ नैतिक मानदंडों के आधार पर चुनाव करता है, क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी वैसे ही सही और ग़लत के बीच चुनाव कर सकती है? मनुष्य के पास तो भावनाएं और संवेदनाएं होती हैं। यंत्र के पास तो यह सब कुछ नहीं होता। मैं अगर स्कूटर चला रहा हूं और सामने कोई शिशु या कोई भी प्राणी आ जाता है तो मैं अपने वाहन को तुरंत रोकने का प्रयास करूंगा। सवाल यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा चालित कोई वाहन भी क्या इसी तरह बर्ताव करेगा?

निश्चय ही जैसे-जैसे इस सुविधा का उपयोग बढ़ेगा ऐसे नित नए सवाल भी खड़े होंगे। कुछ सवालों के हल हमें मिल जाएंगे, तो कुछ नए और अब तक जिन्हें सोचा भी नहीं गया था ऐसे सवाल भी उठ खड़े होंगे। आज हम जिन्हें सोच पा रहे हैं, ज़रूरी नहीं कि कल वे ही समस्याएं हमारे सामने आएं। लेकिन आज हम जो सोच पा रहे हैं उसके अनुसार यह ज़रूरी लग रहा है कि वैश्विक स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के लिए नैतिक मानक तैयार किए जाएं, ताकि कोई भी शक्ति इस सुविधा का मनचाहा और दुर्भावनापूर्ण उपयोग कर सके। यह भी ज़रूरी लगता है कि एक ऐसी आचार संहिता बनाई जाए जो एल्गोरिद्म के मनमाने और दुर्भावनापूर्ण उपयोग पर नियंत्रण रखे। सच तो यह है कि सब कुछ कृत्रिम को सौंप देना बहुत ख़तरनाक साबित हो सकता है। अगर इसमें मानवीय हस्तक्षेप बना रहे तो बहुत हद तक आशंकाओं को निर्मूल किया जा सकता है।

अब तक जो हुआ है उसके आधार पर यह सहज ही कल्पना की जा सकती है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग अभी और बढ़ेगा। और जब इसका अधिक उपयोग होगा तो स्वाभाविक ही है कि इसके दुरुपयोग की आशंकाएं भी बढ़ेगी। मानवता का हित इसी बात में निहित है कि हम अभी से उन आशंकाओं को समूल नष्ट करने के बारे में न केवल सोचें, सक्रिय भी हों। जो लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता का निर्माण व विकास कर रहे हैं उनसे यह अपेक्षा करना अनुचित नहीं होगा कि वे इसे निष्पक्ष बनाए रखने और अधिक नैतिक एवं संवेदनशील बनाने के लिए प्रयत्न करें। सबसे बड़ी ज़रूरत जो मुझे लगती है वह यह है कि हम इसे मनुष्य का विकल्प बनाने से बचें। बेशक हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग करें, और ज़्यादा प्रयोग करें लेकिन इसका इस्तेमाल अपने सहायक के रूप में करें, नियंत्रण अपने हाथों में रखें। इसे स्वायत्त और सर्व शक्तिमान न हो जाने दें।

मानवता का अब तक का इतिहास इस बात के प्रति आश्वस्त करता है कि ऐसा ही होगा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारी क्षमताओं में वृद्धि कर मानवता को अधिक समृद्ध व सबल बनाएगी।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

विश्वविद्यालय के मुखिया का नाम – कुलपति या कुलगुरु

प्रो. अशोक कुमार

विगत दिनों मे मध्य प्रदेश और राजस्थान मे कुलपति का नाम परिवर्तित करके कुलगुरु कर दिया है। कुलपति, कुलगुरु महत्वपूर्ण पद हैं। इसलिए सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है की इन पदों की क्या परिभाषा है और इनकी उत्पत्ति कैसे हुई ?

कुलपति शब्द संस्कृत भाषा से आया है। शब्द का अर्थ होता है:– कुल:– परिवार, वंश, समुदाय, पति:– स्वामी, रक्षक, नेता । संयुक्त रूप से: कुलपति का अर्थ होता है– 'परिवार का रक्षक', 'वंश का नेता', या 'समुदाय का मुखिया'।

कुलपति शब्द का इतिहास समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्राचीन काल: कुलपति शब्द का उल्लेख प्राचीन वैदिक साहित्य में मिलता है। कुलपति का कार्य वेदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का शिक्षण, धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन, परिवार और समुदाय में विवादों का समाधान और सामाजिक रीति-रिवाजों और परंपराओं को बनाए रखना था! उदाहरण:– शतपथ ब्राह्मण: इसमें कुलपति को वेदों के अध्ययन और शिक्षण का जिम्मेदार बताया गया है। मनुस्मृति में कुलपति को परिवार के सभी सदस्यों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों, के कल्याण का रक्षक बताया गया है।

कुलगुरु किसे कहते हैं?

कुलगुरु शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है: कुल और गुरु। कुलगुरु का अर्थ है वंश या परिवार। गुरु का अर्थ है ज्ञान दाता या शिक्षक। इस प्रकार, कुलगुरु का अर्थ है वंश या परिवार का गुरु। कुलगुरु वह व्यक्ति होता है जो किसी विशेष वंश या परिवार के सदस्यों को धार्मिक शिक्षा, संस्कार और ज्ञान प्रदान करता है। वे अक्सर उस वंश या परिवार के पुरोहित भी होते हैं।

कुलगुरु को वंश या परिवार का मार्गदर्शक माना जाता है। वे वंश या परिवार के सदस्यों को जीवन जीने के सही तरीके के बारे में सिखाते हैं और उन्हें धार्मिक अनुष्ठानों और परंपराओं का पालन करने में मदद करते हैं। गुरु वंश या परिवार के सदस्यों को वेद, उपनिषद, पुराण और अन्य धार्मिक ग्रंथों के बारे में सिखाते हैं। वे वंश या परिवार के सदस्यों को संस्कार देते हैं, जैसे कि जन्म संस्कार, विवाह संस्कार और मृत्यु संस्कार।

कुलपति और कुलगुरु के बीच कुछ अन्य महत्वपूर्ण अंतर होते हैं! कुलपति किसी विश्वविद्यालय का प्रमुख आमतौर पर विश्वविद्यालय के न्यासी बोर्ड द्वारा चुना जाता है। कुलगुरु को आमतौर पर वंश या परिवार के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा चुना जाता है। कुलपति का कार्यकाल आमतौर पर निश्चित होता है। कुलगुरु का कार्यकाल आजीवन हो सकता है। कुलपति विश्वविद्यालय के समग्र विकास के लिए जिम्मेदार होते हैं। वे शिक्षा और अनुसंधान के मानकों को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होते हैं। कुलगुरु वंश या परिवार के धार्मिक और नैतिक कल्याण के लिए जिम्मेदार होते हैं। वे वंश या परिवार की परंपराओं और मूल्यों को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होते हैं। कुलपति: कुलपति को शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में विशेषज्ञता होनी चाहिए। उन्हें प्रशासनिक और नेतृत्व कौशल भी होना चाहिए। कुलगुरु को धर्म, शास्त्रों और परंपराओं का गहन ज्ञान होना चाहिए। वे दयालु, सहानुभूतिपूर्ण और प्रेरणादायक भी होने चाहिए। कुलपति: कुलपति को विश्वविद्यालय समुदाय में सम्मानित किया जाता है। कुलगुरु को वंश या परिवार के सदस्यों द्वारा गहराई से सम्मानित किया जाता है।

कुलपति नाम भारतीय विश्वविद्यालयों के प्रमुख के लिए एक उपयुक्त और प्रचलित नाम है। यह नाम विश्वविद्यालय के प्रशासनिक प्रमुख की भूमिका को स्पष्ट रूप से दर्शाता है और यह छात्रों, शिक्षकों और आम जनता के बीच अच्छी तरह से समझा जाता है। इसलिए, विश्वविद्यालयों के मुखिया का नाम कुलपति ही होना चाहिए, कुलगुरु नहीं।

विश्वविद्यालय के मुखिया का नाम कोई भी हो, सबसे महत्वपूर्ण है कि विश्वविद्यालय का काम अच्छा होना चाहिए। महत्वपूर्ण यह है कि विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और छात्रों के विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करे।

मैं यह आप से विचार करने के लिए कहता हूँ और एक प्रश्न भी करता हूँ की क्या कुलपति का नाम कुलगुरु मे परिवर्तितित करना उचित है ?

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय,
विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

विश्व हिंदू परिषद का दल कुंभ के लिए रवाना

करौली(निं.सं.)महाकुंभ इसके बारे में ऐसा बताया जाता है कि 144 साल बाद कई नक्षत्र एक जगह एकत्रित हुए हैं। इस समय पर त्रिवेणी में स्नान करने का अलग ही पुण्य प्राप्त होता है इसी भावना को ध्यान में रखते हुए विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं का एक दल गुलाब बाग तिराहे से प्रयागराज एवं अयोध्या के लिए रवाना होने वाली बस का जिला अध्यक्ष चैरजी सिंह ने विधिवत रूप से पूजन किया तथा बस रवाना होने से पूर्व यात्रियों को दुपट्टा ओढाकर स्वागत किया।

उन्होंने बताया कि इस पावन अवसर 144 साल बाद प्राप्त हुआ है। इसका 12 वर्ष में पड़ने वाले कुंभ स्नान से अधिक महत्व है उन्होंने बताया कि विश्व हिंदू परिषद पूरे विश्व भर के हिंदुओं के कल्याण एवं सनातन के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान के लिए कार्य करता है। विश्व में सुख शांति और समृद्धि कि भावना को ध्यान में रखकर सनातनी कार्यकर्ताओं की यात्रा शुभ एवं मंगलमय हो ऐसी कामना के साथ बस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर ऊधौसिंह एडवोकेट,नरेंद्र सिंह जादौन,रणवीर सिंह जखोदा,ओम प्रकाश सिंह रामपुरा, हाकिम सिंह चांदपुर, सूबेदार मोहन सिंह कोटा छावर के अलावा काफी तादात में विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

'आत्मविश्वास पैदा कर स्वावलंबी बने'

करौली । राजस्थान राज्य भारत स्काउट ब गाइड जिला मुख्यालय करौली के तत्वाधान में जिला स्काउट गाइड भवन में आने को कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गुमाना राम ने कहा की छोटे-छोटे बालक बालिकाऐ अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा करें एवं अच्छे नागरिक बनकर आमजन की सेवा के लिए तैयार रहें।

सीओ स्काउट अनिल कुमार गुप्ता ने बताया कि स्काउट गाइड के स्थापना दिवस 22 फरवरी के अवसर पर अनेकों कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें कब बुलबुल उत्सव के समापन समारोह में मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गुमना राम ने कहा कि कब बुलबुल शेर के बच्चे होते हैं और शेरों में आत्मविश्वास अत्यधिक होता है उसी तरह बाज भी आत्मविश्वासी होता है बच्चे अपने आप को इस तरह आत्मविश्वास से भरपूर बनाएं और सोचें कि वह कुछ भी कर सकते हैं उन्हें अपने आप को स्वावलंबी अर्थात अपने छोटे-छोटे काम स्वयं करने चाहिए स्वयं अपने बर्तन साफ करने चाहिए स्वयं अपने बस्ते को यथास्थान रखना चाहिए मोबाइल का कम से कम उपयोग करना चाहिए मोबाइल में खेल नहीं खेलना चाहिए अधिक से अधिक पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए और अपना भविष्य बनाना चाहिए उन्होंने कहा कि अपने माता-पिता भाई बहन एवं परिजनों को दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने के लिए बाध्य करना चाहिए छोटे-छोटे बालक बालिकाएं अपने परिजनों को जिद करके अच्छी तरह से समझा सकते हैं सड़क पर पड़े हुए केले के छिलके को हटाना वृद्ध व्यक्ति को सड़क पार कर देने को भी बड़ी सेवा का सकते हैं इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले कब बुलबुल बालक बालिकाओं को पारितोषिक प्रदान किया मेंढक दौड़ में मां जगदंबा माध्यमिक विद्यालय हिंडौन के गगन प्रथम एवं इसी विद्यालय की सविता को द्वितीय लेमन दौड़ में मां जगदंबा विद्यालय हिंडौन के अमन को प्रथम जबकि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भावली की राधिका को द्वितीय रुमाल झपट्टा में मां जगदंबा माध्यमिक विद्यालय प्रथम जबकि महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय श्री महावीर जी को द्वितीय एवं मोंटेसरी किड्स पब्लिक स्कूल को तृतीय स्थान का पुरस्कार प्रदान किया इसी तरह कुर्सी दौड़ में बच्चन दास महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय श्री महावीर जी को प्रथम जबकि मां जगदंबा माध्यमिक विद्यालय हिंडौन के रोबन को द्वितीय जलेबी दौड़ में मां जगदंबा किसी विद्यालय के तरुण को द्वितीय का पुरस्कार प्रदान किया गया अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक ने संभागी विद्यालय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भावली महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय श्री महावीर जी महात्मा ज्योतिबा फुले उच्च माध्यमिक विद्यालय करौली मांटेसरी पब्लिक स्कूल करौली को भी सहभागिता शील्ड प्रदान की इससे पूर्व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के शिविर में पहुंचने पर कब बुलबुल के दल ने गॉड ऑफ ऑनर सहायक शिविर संचालक सुरेश चंद शर्मा के नेतृत्व में प्रदान किया जबकि शिविर संचालक हीरालाल रावत सुनील कुमार शर्मा किशन दास राधा मोहन गुर्जर ने संगठन का स्कार्फ पहनाकर स्वागत किया । इस अवसर पर सीओ गाइड गाइडर अनीता शर्मा मानसी शर्मा राष्ट्रपति रोवर मान प्रकाश शर्मा रोवर लीडर धर्मराज गुर्जर राज्य पुरस्कार रोवर लव कुश मंगल आदि उपस्थित थे । विश्व स्काउट गाइड दिवस के अवसर पर सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में स्काउट गाइड रोवर रेंजर ने भाग लिया एवं सभी धर्म की प्रार्थना का वाचन किया । इस अवसर पर कब बुलबुल की निबंध भाषण नारा लेखन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें बालक बालिकाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। नन्हे नन्हे बालक बालिकाओं में श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न के करने की दृष्टि से स्वच्छता अभियान भी चलाया गया सीओ स्काउट अनिल कुमार गुप्ता के अनुसार 22 फरवरी को विश्व में विश्व स्काउट गाइड दिवस का आयोजन किया जाता है इससे स्काउट स्काउट दिवस जब की गाइड चिंतन दिवस के रूप में मानते हैं इस दिन स्काउटिंग के संस्थापक लॉर्ड रॉबर्ट स्टीफनसन स्मिथ बेडेन पॉवेल का जन्म हुआ था एवं उन्होंने 1907 में ब्राउन सी द्वीप पर 20 बच्चों के साथ स्काउट शिविर आयोजित कर स्काउटिंग की स्थापना की।

कुशालगढ महोत्सव की तैयारी

गंगापुर सिटी । कुशालगढ क्लब तत्वाधान में कुशालगढ महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। आयोजन की तैयारियो को लेकर क्लब सदस्यो को अलग अलग जिम्मेदारी सौपी गई। वरिष्ठ सलाहकार डॉ. क्षितिज गुप्ता व सरंक्षक कैलाशचंद गुप्ता, वेदप्रकाश पोरवाल ने बताया कि पिछले 6 वर्षो से कुशालगढ महोत्सव बडे हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इस वर्ष भी कुशालगढ महोत्सव बडे धूमधाम से मनाया जायेगा। हर वर्ष अलग-अलग क्षेत्रों की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। इस वर्ष कुशालगढ महोत्सव की 7वीं वर्षगांठ पर ग्लोबल वूमन अवार्ड 2025 का आयोजन 16 मार्च को किया जायेगा। वरिष्ठ सदस्य राधा मोहन अग्रवाल ने बताया कि इसकी पूर्व संध्या पर कुशालगढ के बाबा श्याम मंदिर पर झण्डारोहण होगा व शाम को भजन संध्या का आयोजन किया जायेगा।

जिसकी जिम्मेदारी क्लब के वरिष्ठ सदस्य कृष्ण कुमार गोयल, ओम प्रकाश अग्रवाल व मनीष सागवान की होगी। साथ ही प्रसाद की व्यवस्था महेश पट्टी वालों के द्वारा करवाई जायेगी। कुशालगढ से कुशालगढ के बाबा श्याम मंदिर का संक्षिप्त इतिहास का बोर्ड बनवाने की जिम्मेदारी जाकिर कुरैशी की रहेगी। उन्हीं के सहयोग से बोर्ड बनवा कर मंदिर परिसर में लगाया जायेगा। जिससे आगे आनी वाली पीढियों को इसके इतिहास की जानकारी मिल सके। 16 मार्च को होने वाले कार्यक्रम आपसी सहयोगकर्ताओं द्वारा किया जायेगा।

भरतपुर पुलिस ने पेश की अतिथि देवो भव: की मिसाल

भरतपुर (निस)। सहायक पुलिस अधीक्षक पंकज व थाना सेवर पुलिस ने अपनी तत्परता और कर्तव्य निष्ठा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति व अतिथि सत्कार के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध अपनी अतिथि देवो भव: की महान परम्परा का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए फ्रांस से आये विदेशी पर्यटकों की ना केवल हर संभव मदद कर उनके गन्तव्य जयपुर पहुंचाया बल्कि उनके कीमती सामान आदि को सुरक्षित रूप से वापस दिलवाया। यह घटना उस समय हुई जब आगरा से भरतपुर घूमने आए एक फ्रांससीसी पर्यटकों वाहन का चालक विदेशी सैलानियों का सामान लेकर फरार हो गया। कन्ट्रोल रूम भरतपुर को सूचना मिली कि ठीन विला होटल पर दो फ्रांसीसी पर्यटक घूमने के लिए आये हैं। जिनका ड्राईवर गाडी व उनका सामान लेकर भाग गया है। मामला संज्ञान में आने पर तत्परता से त्वरित कार्रवाई करते हुए सहायक पुलिस अधीक्षक, वृत शहर पंकज व थाना सेवर पुलिस टीम पुलिस टीम के मौके पर पहुंचे। सहायक पुलिस अधीक्षक पंकज द्वारा विदेशी पर्यटकों से वार्तालाप की जाकर हालत पूछे गये तो विदेशी पर्यटक ऐनी ऑर्डीन और कैबोट द्वारा बताया कि हमने आगरा ऑनलाईन टैक्सी बुक कराई थी। ड्राईवर का नाम छत्तू सिंह था। आगरा से रवाना होकर हम लोग फतेहपुरसीकरी घूमे। वहां से रवाना होकर जयपुर जा रहे थे। रास्ते में ग्रीन विला होटल भरतपुर में हम गाडी से उतरकर चाय पीने बैठे थे तो गाडी वाला हमारे सामान को लेकर भाग गया है। गाडी के अन्दर हमारा सामान रखा हुआ था। हालात जानने के बाद मामले की गंभीरता को देखते हुए त्वरित कन्ट्रोल रूम के जरिये उस गाडी के सम्बन्ध में भरतपुर, दौसा व जयपुर के थाना क्षेत्रों में प्रभावी नाकाबन्दी करने हेतु अवगत कराया एवं टोल लुधावई मैनेजर को जयपुर तक एनएचआई वाले टोलों को गाडी नम्बर देकर रूकवाने बावत अवगत कराया गया। टैक्सी मालिक अमन जाखड का पता लगाकर वाहन व उसके चालक के बारे में जानकारी तथा उक्त घटना से अवगत कराया एवं तुरन्त विदेशी पर्यटकों की हर संभव मदद करने के निर्देश दिये।

चूरू महोत्सव में शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियों पर झूमे चूरू वासी

चूरू । जिला मुख्यालय पर पुलिस लाइन में चल रहे चूरू महोत्सव 2025 के पहले दिन शनिवार शाम को सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़, विधायक हरलाल सहारण, जिला प्रमुख वंदना आर्य, प्रभारी सचिव भास्कर ए सावंत, जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा, जिला उप प्रमुख महेंद्र न्यौल सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारियों व चूरूवासियों ने शिरकत की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि चूरू की संस्कृति संपूर्ण विष्व में प्रसिद्ध है। यहां के पंडित भरत व्यास ने सिनेमा जगत में बहुत बड़ा नाम कमाया है। यहां की संस्कृति की बदौलत चूरू को छोटी काशी के नाम से जाना जाता है। सभी लोग मिलकर लोकरंग का आनंद लें और अपनी विरासत का संरक्षण करें। विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि चूरू महोत्सव 2025 का आयोजन एक विशेष और सराहनीय पहल है। आज से 18 साल पहले आयोजित चूरू महोत्सव की यादें ताजा हो गई हैं। इस अवसर पर मंचस्थ अतिथियों ने प्रवासी सम्मान गौरव श्री अवार्ड से प्रवासी चूरू वासियों का सम्मान किया।

■ चूरू महोत्सव 2025 के पहले दिन सांस्कृतिक संध्या में पद्मश्री गुलाबो सपेरा, बॉलीवुड पार्श्व गायक रविंद्र उपाध्याय, वाइब्रेंट इंडिया समूह ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

सांस्कृतिक संध्या के दौरान पदमश्री गुलाबो ने अपनी तीसरी पीढ़ी के साथ लोकगीतों पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इसी के साथ कोक स्टूडियो फेम भंवरी देवी, प्रसिद्ध कोरियोठाफर संतोष नायर द्वारा निर्देशित वाइब्रेंट इंडिया समूह नृत्य प्रस्तुति और बॉलीवुड पार्श्व गायक रविंद्र उपाध्याय ने हिंदी गीतों की प्रस्तुतियां दी। इस दौरान एडीएम अर्पिता सोनी, सीईओ ष्वेता कोचर, एएसपी लोकेंद्र दादरवाल, एएसपी कृष्णा, पूर्व सभापति विजय शर्मा, विक्रम कोटवाद, सुशील लाटा, अभिषेक चोटिया, दीनदयाल सैनी, सुरेश सारस्वत, चूरू एसडीएम बिजेंद्र सिंह, तारानगर एसडीएम राजेंद्र कुमार, रतनगढ एसडीएम रामकुमार वर्मा, तहसीलदार अशोक गोरा, राजगढ तहसीलदार धीरज झाझडिया सहित बड़ी संख्या में अधिकारी, जनप्रतिनिधि व आमजन मौजूद थे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 24 फरवरी, 2025

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र सायं 6:59 तक, सिद्धि योग दिन 10:05 तक, बालव करण दिन 1:45 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 12:56 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज विजया एकादशी व्रत है। मंगल मार्गी प्रात: 7:31 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:25 तक, शुभ 9:50 से 11:15 तक, चर 2:05 से 3:30 तक, लाभ-अमृत 3:30 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:00, सूर्यास्त 6:21

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आज व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से वाद-विवाद हो सकते हैं। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में सफल रहेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कुंभ
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
`व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।